

श्रीमद्भागवतम् स्कन्ध 6 अध्याय 15: चित्रकेतु को सान्त्वना

3 October 2026



पाठ से पहले एक निवेदन

श्रीमद्भागवत महापुराण के ये अध्यायवार सार गीता प्रेस भागवत को मुख्य आधार मानकर तैयार किए गए हैं। ये भागवत के अध्ययन में सहायक हैं, मूल ग्रंथ का स्थान नहीं ले सकते।

अध्ययन का मुख्य और अनुशंसित मार्ग गीता प्रेस की भागवत पुस्तक से सीधा पाठ है। यात्रा में, घर से दूर, या जब पुस्तक पास न हो, तब निरंतर अध्ययन, पुनरावृत्ति और समझ के लिए इन सारों का सहारा लिया जा सकता है।



टूटे हुए राजा के शोक में ऋषि अंगिरा और नारद आते हैं, जो कोमलता से उसकी दृष्टि नन्हें शरीर से हटाकर शाश्वत आत्मा की ओर उठाते हैं, यह सिखाते हुए कि प्राणी काल द्वारा वैसे ही जोड़े और बिछुड़ाए जाते हैं जैसे धारा पर रेत के कण, और जो शोक करता है वह अमर है।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

श्रीमद्भागवतम् विज्जम में आपका स्वागत है — श्रीमद्भागवत महापुराण की पावन कथाओं और शिक्षाओं की एक भक्तिपूर्ण यात्रा। षष्ठ स्कन्ध का पन्द्रहवाँ अध्याय पिछले अध्याय के शोक को समेटकर उसे भरने लगता है। ऋषि अंगिरा और नारद टूटे हुए राजा चित्रकेतु से बात करते हैं, उसके शोक को अन्तर्दृष्टि में बदलते हुए: कि समस्त मिलन और विछोह काल का कार्य हैं, कि प्रत्येक सम्पत्ति शोक का स्रोत है, और कि भीतर

की आत्मा शाश्वत है — राजा को उस पवित्र प्रार्थना को ग्रहण करने के लिए तैयार करते हुए जिससे वह भगवान् का दर्शन करेगा।

अध्याय-परिचय

- शास्त्र: श्रीमद्भागवत महापुराण
- स्कन्ध: 6 (षष्ठ स्कन्ध)
- अध्याय: 15 (पञ्चदश अध्याय)
- अध्याय-शीर्षक: ऋषियों द्वारा राजा चित्रकेतु को सान्त्वना
- मुख्य वक्ता: श्रीशुकदेव गोस्वामी, राजा परीक्षित को कथा सुनाते हुए; कथा के भीतर ऋषि अंगिरा तथा नारद
- मुख्य श्रोता: राजा परीक्षित; बाह्य कथा में नैमिषारण्य के ऋषिगण
- मुख्य स्थल: राजा चित्रकेतु का राजमहल, शिशु के शरीर के पास
- केन्द्रीय विषय: ऋषियों द्वारा चित्रकेतु को सान्त्वना तथा वह उपदेश जो उसे भगवान् की ओर ले जाता है
- मुख्य श्लोक-परिधि: स्कन्ध 6, अध्याय 15, श्लोक 1-28
- मुख्य संस्करण: गीता प्रेस श्रीमद्भागवत महापुराण

वह प्रश्न जो नेत्र खोल देता है

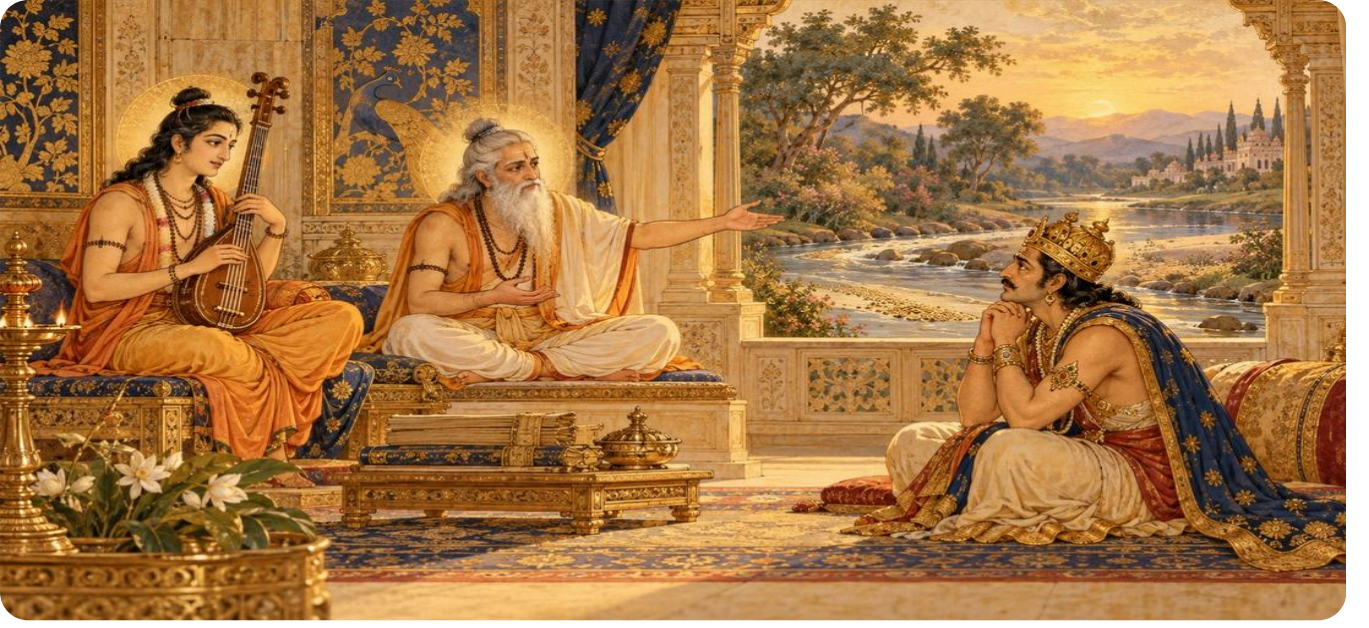
राजा को अपने मृत शिशु के पास शव के समान पड़ा, शोक से अभिभूत पाकर, ऋषि अंगिरा और नारद उसे ज्ञान के वचनों से प्रबुद्ध करने लगे। उन्होंने उससे एक ऐसा प्रश्न किया जो सीधे उसके शोक की जड़ तक पहुँचा: पूर्वजन्म में यह बालक तुम्हारा क्या लगता था, अब क्या है, और आगे क्या होगा? और तुम उसके क्या थे? उन्होंने कहा कि जैसे नदी की धारा रेत को बहाकर कभी जोड़ देती और कभी बिखेर देती है, उसी प्रकार प्राणी समय के प्रवाह में परस्पर आते और बिछुड़ते रहते हैं (श्लोक 1-3)।

यथा प्रयान्ति संयान्ति स्रोतोवेगेन बालुकाः ।

संयुज्यन्ते वियुज्यन्ते तथा कालेन देहिनः ॥ ३ ॥

yathā prayānti saṁyānti sroto-vegena bālukāḥ saṁyujyante viyujyante tathā kālena dehinaḥ

अर्थ: जैसे बहती धारा के वेग से बालू के कण एक साथ बहा लाए और बहा ले जाए जाते हैं, वैसे ही देहधारी प्राणी काल द्वारा परस्पर मिलाए और पृथक् किए जाते हैं। (स्कन्ध 6, अध्याय 15, श्लोक 3)



ऋषि पूछते हैं कि यह बालक इस जीवन से पहले और बाद में उसका क्या था, यह सिखाते हुए कि प्राणी काल द्वारा धारा पर रेत के समान जोड़े और अलग किए जाते हैं (श्लोक 1-8)।

जैसे कहीं बीज से बीज उगते हैं और कहीं नहीं, ऋषियों ने आगे कहा, वैसे ही प्राणी भगवान् की माया से एक-दूसरे से उत्पन्न होते हैं। तुम, हम, और ये सब प्राणी न जन्म से पूर्व थे और न मृत्यु के पश्चात् रहेंगे; केवल भगवान् ही, अजन्मा और निर्लिप्त, अपने द्वारा उत्पन्न अन्य प्राणियों के माध्यम से लीलापूर्वक प्राणियों की सृष्टि, रक्षा और संहार करते हैं। पुत्र का शरीर माता-पिता के शरीरों से वैसे ही बनता है जैसे एक बीज से दूसरा, फिर भी इन सब शरीरों में बसने वाली आत्मा स्वयं भगवान् के समान शाश्वत है। शरीर और आत्मा का जो भेद प्रतीत होता है, उन्होंने कहा, वह अनादि काल से है और केवल अज्ञान से कल्पित है (श्लोक 4-8)।

राजा अपने गुरुओं को पहचानता है

इस प्रकार सान्त्वना पाकर, राजा चित्रकेतु ने मानसिक व्यथा से मुरझाया अपना मुख पोंछा और बोले। आप कौन हैं, उसने पूछा, इतने ज्ञान-सम्पन्न और समस्त पूज्यों में पूज्य, तपस्वियों के वेश में यहाँ आए हुए? उसने समझा कि भगवान् के प्रिय ब्राह्मण पृथ्वी पर विचरते हैं, कभी उन्मत्त के समान प्रकट होते हुए, जिससे उस जैसे विषयासक्त जनों को जगा सकें। संसार में ज्ञान बाँटने के लिए विचरने वाले महान् ऋषियों का नाम लेकर, उसने दोनों के समक्ष नतमस्तक होकर विनती की कि वे अज्ञान के अन्धकार में डूबे उसके लिए ज्ञान का दीप उँचा उठाएँ (श्लोक 9-16)।



सान्त्वना पाकर राजा अपना मुख पोंछते हैं, दोनों ऋषियों को ज्ञान के स्वामी के रूप में पहचानते हैं, और उनसे ज्ञान का दीप ऊँचा उठाने की विनती करते हैं (श्लोक 9-16)।

तब अंगिरा ने अपना परिचय दिया। “मैं वही अंगिरा हूँ जिसने तुम्हें पुत्र की लालसा होने पर पुत्र का वरदान दिया था,” उन्होंने कहा, “और यहाँ स्वयं ब्रह्मा के पुत्र देवर्षि नारद हैं। तुम्हें भगवान् विष्णु का भक्त जानकर, एक ऐसे शोक में डूबा जिसके तुम योग्य नहीं, हम तुम पर कृपा बरसाने आए हैं — क्योंकि ब्राह्मणों के भक्त और भगवान् के भक्त को कभी निराश नहीं होना चाहिए। मैं अपनी पहली भेंट में ही तुम्हें परम ज्ञान देने जा रहा था; किन्तु तुम्हारा आग्रह देखकर, मैंने तुम्हें इसके स्थान पर एक पुत्र दिया, और अब तुमने उस वेदना को चख लिया है जो पुत्रवानों को वहन करनी पड़ती है” (श्लोक 17-20)।

समस्त सम्पत्तियाँ शोक का स्रोत

तब ऋषि ने राजा की दृष्टि एक व्यापक सत्य की ओर खोली: कि पत्नी, घर, धन और राज्य के समस्त वैभव अन्ततः शोक, मोह और भय ही देते हैं, और आकाश में कल्पित स्वप्न-नगर के समान क्षणभंगुर हैं (श्लोक 21-23)।

अधुना पुत्रिणां तापो भवतैवानुभूयते ।

एवं दारा गृहा रायो विविधैश्वर्यसम्पदः ॥ २१ ॥

शब्दादयश्च विषयाश्चला राज्यविभूतयः ।

मही राज्यं बलं कोषो भृत्यामात्यसुहृज्जनाः ॥ २२ ॥

सर्वेऽपि शूरसेनेमे शोकमोहभयार्तिदाः ।

गन्धर्वनगरप्रख्याः स्वप्नमायामनोरथाः ॥ २३ ॥

adhunā putriṇāṃ tāpo bhavataivānubhūyate evaṃ dārā gṛhā rāyo vividhaiśvarya-sampadaḥ śabdādayaś ca viṣayaś calā rājya-vibhūtayaḥ mahī rājyaṃ balaṃ koṣo bhṛtyāmātya-suhṛj-janāḥ sarve 'pi sūraseneme śoka-moha-bhayārtidāḥ gandharva-nagara-prakhyāḥ svapna-māyā-manorathāḥ

अर्थ: पुत्रवानों की जो वेदना है, वह अब तुम अनुभव कर रहे हो। इसी प्रकार, हे शूरसेन-नरेश, पत्नी, घर और धन, नाना प्रकार की सम्पदाएँ, इन्द्रियों के चंचल विषय तथा राज्य के वैभव — भूमि, सत्ता, सेना, कोष, सेवक, मन्त्री और मित्र — ये सब शोक, मोह, भय और पीड़ा देने वाले हैं; वे आकाश में दिखते नगर के समान, स्वप्न, माया तथा मनोरथ-मात्र हैं। (स्कन्ध 6, अध्याय 15, श्लोक 21-23)

इसलिए, अंगिरा ने आग्रह किया, शान्त मन से आत्मा के यथार्थ स्वरूप का अन्वेषण करो, इस विश्वास को त्याग दो कि दृश्य जगत् स्थायी रूप से सत्य है, और भीतर की शान्ति में विश्राम करो (श्लोक 24-26)।



अंगिरा अपना परिचय देते हैं और सिखाते हैं कि पत्नी, घर, धन और राज्य सभी शोक के स्रोत हैं, आकाश में कल्पित नगर के समान क्षणभंगुर (श्लोक 17-26)।

पवित्र प्रार्थना का उपहार

तब देवर्षि नारद ने, राजा को अब तैयार देख, उसे एक अमूल्य उपहार दिया। स्वयं को शुद्ध करो, उन्होंने कहा, और मुझसे यह पवित्र प्रार्थना ग्रहण करो, जो परम कल्याण का धाम है; इसका जप करने और इस पर अपना चित्त स्थिर करने से, तुम सात रात्रियों के पश्चात् भगवान् संकर्षण का दर्शन करोगे। उनके चरणों के तलवों की शरण लेकर, नारद ने उसे बताया, सुदूर अतीत के भक्तों ने — भगवान् शिव तथा अन्य ने — इस संसार की माया को पार किया और उनकी अनुपम महिमा को प्राप्त किया, और तुम भी शीघ्र ही वही परम फल पाओगे (श्लोक 27-28)।



नारद राजा को वह पवित्र प्रार्थना देते हैं जिससे सात रात्रियों के पश्चात् वह भगवान् संकर्षण का दर्शन करेगा (श्लोक 27-28)।

इस अध्याय की प्रमुख शिक्षाएँ

1. मिलन और विछोह काल का कार्य हैं। प्राणी धारा पर रेत के कणों के समान जोड़े और अलग किए जाते हैं; शोक इसे भूल जाने से आता है (श्लोक 3)।
2. आत्मा शाश्वत है; केवल शरीर आते-जाते हैं। पुत्र का शरीर माता-पिता के शरीरों से बनता है, फिर भी सब प्राणियों में बसने वाली आत्मा स्वयं भगवान् के समान अमर है (श्लोक 7)।
3. प्रत्येक सांसारिक सम्पत्ति शोक का स्रोत है। पत्नी, घर, धन और राज्य — सभी शोक, भय और मोह देते हैं, आकाश में कल्पित नगर के समान क्षणभंगुर (श्लोक 21-23)।
4. भक्त को कभी निराश नहीं होना चाहिए। अंगिरा राजा को स्मरण कराते हैं कि भगवान् का प्रिय शोक में डूबने योग्य नहीं, और उसे उससे उठाने आते हैं (श्लोक 18-19)।
5. ज्ञान हृदय को भगवान् के दर्शन के लिए तैयार करता है। राजा के सान्त्वित और विरक्त होने पर ही नारद उसे वह पवित्र प्रार्थना देते हैं जिससे वह भगवान् संकर्षण को देखेगा (श्लोक 27-28)।

एक भक्तिपूर्ण चिन्तन

शोक की यह विशेषता है कि वह हमें नितान्त अकेला अनुभव कराता है, मानो हम जहाँ खड़े हैं वहाँ कभी कोई न खड़ा हुआ हो। इस अध्याय की कृपा यह है कि वह राजा को रोना बन्द करने को कहकर आरम्भ नहीं करता; वह एक प्रश्न से आरम्भ करता है। यह बालक तुम्हारा पुत्र बनने से पहले तुम्हारा क्या था, और जब यह जीवन समाप्त होगा तब क्या होगा? उस एक प्रश्न में ऋषि कोमलता से शोक की बाँधी गाँठ को ढीला कर देते हैं, चित्रकेतु को स्मरण कराते हुए कि जिस नन्हीं आत्मा का वह शोक करता है वह कभी वस्तुतः उसकी रखने को थी ही नहीं — कि प्राणी धारा पर बहती रेत के समान मिलते और बिछुड़ते हैं, और जो प्रेम करता है और जिससे प्रेम किया जाता है, दोनों अमर हैं, शरीर के आने-जाने से

अछूते। यह रूखी सान्त्वना नहीं है। यह गहनतम प्रकार की सान्त्वना है, क्योंकि वह यह वचन नहीं देती कि कुछ खोया ही नहीं, अपितु प्रकट करती है कि आवश्यक वस्तु कभी खोई जा ही नहीं सकती। और इस उपचार के क्रम पर ध्यान दीजिए: पहले राजा को सान्त्वना मिलनी चाहिए और उसका हृदय संसार से मुड़ना चाहिए, और तभी उसे वह प्रार्थना दी जाती है जो उसे भगवान् का दर्शन कराएगी। ज्ञान भूमि साफ करता है; भक्ति मन्दिर बनाती है। जब शोक हमसे मिलने आए, हम उसे वही प्रश्न पूछने दें, और चित्रकेतु के समान, जो क्षणभंगुर है उससे उस ओर मुड़ें जो अविनाशी है।

एक दैनिक भक्ति-अभ्यास

आज, कुछ क्षण शान्त बैठिए और किसी ऐसे व्यक्ति या वस्तु को मन में लाइए जिससे आप प्रेम करते हैं या जिसे आप सँजोते हैं। कोमलता से स्वयं को स्मरण कराइए कि वह आपको भगवान् द्वारा कुछ समय के लिए सौंपी गई है, उनकी इच्छा से आपसे ऐसे जुड़ी जैसे धारा रेत को समेटती है, और कि आपके भीतर तथा जिनसे आप प्रेम करते हैं उनके भीतर की आत्मा शाश्वत है और उनमें सुरक्षित है। अपनी व्याकुल पकड़ थोड़ी ढीली कीजिए, और उसके स्थान पर भगवान् का पावन नाम लीजिए, उनसे प्रार्थना करते हुए कि वे आपके हृदय को उस शान्ति में बिठाएँ जो किसी वस्तु को पकड़े रखने पर निर्भर नहीं।

उपसंहार

षष्ठ स्कन्ध का पन्द्रहवाँ अध्याय शोक को ज्ञान में बदलते हुए दिखाता है। ऋषि अंगिरा और नारद चित्रकेतु के शोक को तुच्छ नहीं कहते; वे उसकी दृष्टि उससे ऊपर उठाते हैं, यह दिखाते हुए कि समस्त मिलन काल द्वारा रचे जाते हैं, कि सांसारिक वस्तुएँ केवल दुःख देती हैं, और कि चेतन आत्मा कभी नष्ट नहीं होती। सान्त्वित और जाग्रत होकर, राजा एक ऐसे भक्त के रूप में पहचाना जाता है जिसे कभी निराश नहीं होना चाहिए, और नारद उसे वह पवित्र प्रार्थना प्रदान करते हैं जिससे वह सात रात्रियों के पश्चात् भगवान् संकर्षण का दर्शन करेगा। जैसे-जैसे यह स्कन्ध अगले अध्याय में चित्रकेतु के भगवद्-दर्शन की ओर बढ़ता है, हम इस अध्याय का उपचारकारी सत्य साथ ले चलते हैं: कि आवश्यक वस्तु कभी खोई नहीं जा सकती, और शोक, ठीक से मार्गदर्शित होकर, आत्मा को घर ले जाता है।

श्रीमद्भागवतम् की दिव्य विद्या हमारे हृदयों में शुद्ध भक्ति जगाए।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

जय श्री माधव।

संदर्भ तथा साभार

- मुख्य संस्करण: गीता प्रेस, श्रीमद्भागवत महापुराण (अंग्रेज़ी, सम्पूर्ण), षष्ठ स्कन्ध, पञ्चदश प्रवचन।
- शृंखला: Srimad Bhagavatam Wisdom · Biswa Sanatan Dharma Seva Trust।
- पण्डित डॉ. श्री काशीनाथ मिश्र के आध्यात्मिक मार्गदर्शन तथा अनुशंसा का अनुसरण करते हुए प्रस्तुत।

यह लेखक के अपने शब्दों में एक मौलिक, श्रद्धापूर्ण पुनर्कथन है, जिसमें संक्षिप्त उद्धृत श्लोक देवनागरी तथा लिप्यन्तरण में और उनके अर्थ सारांश के रूप में दिए गए हैं। यह किसी एक प्रकाशक के निरन्तर अनुवाद या टीका का पुनरुत्पादन नहीं है। किसी प्रकाशक द्वारा संबद्धता या समर्थन का कोई अभिप्राय नहीं है।

॥ हरि ॐ तत्सत् ॥

जय श्री माधव

ऑनलाइन पढ़ें: kalkiabatara.org/hi/blog-srimad-bhagavatam-canto-6-chapter-15-citraketu-consolidated-hi.html

श्रीमद्भागवतम् विज्ञम • कल्कि अवतार इंटरनेशनल • बिस्व सनातन धर्म सेवा ट्रस्ट

